प्रधान त्रिविधमार्ग

भट्टारक गुरुवरों को प्रणाम करता हूँ।

श्रवणार्थ प्रवर्तन

ये मार्ग समस्त जिन प्रवचनों के ह्रदयगत विषय हैं, जिनपुत्रों द्वारा अनुशंसित हैं, सौभाग्यशाली मुमुक्षुओं का तीर्थस्थान (प्रवेशस्थान) हैं, इनका मैं यथाशक्ति प्रतिपादन करूँगा (१)

(जो) भाव सुख (अर्थात सांसारिक सुखों) से निर्लिप्त, क्षणसम्पति को कृगार्थ करने के लिए उद्यत और जिन प्रिय मार्ग के प्रति विश्वास रखने वाले भाग्यवान हैं,वे लोग (इसे)प्रशन्न मन से सुनें (२)

सामान्यमार्ग

निर्याणचित्त-

विना विशुद्ध निर्याणचित्त के (अर्थात) भवसरोवर का फल-भूत सुखापेक्षी (लोगों) की शान्ति का कोई उपाय नहीं है। भवासक्ति से ही तो देही (जीव) सम्प्रतिबद्ध होते हैं। अतः (मुमुक्षुओं को) निर्याण (चित्त) की खोज करनी ही चाहिए (३)

क्षणसंपत्ति की दुर्लभता-

क्षणसम्पति की दुर्लभता एवं आयु की अनिश्चितता की भावना करने से एहिकता का अभिनिवेश समाप्त हो जाता है। कर्म-फल की अविसंवादकता (अर्थात कर्मफल की सापेक्षता एवं अत्यन्त प्रतिबद्धता) और सांसारिक दुखों के पुनः पुनः चिंतन करने से साम्परायिक (अर्थात पारलौकिक) अभिनिवेश (भी) समाप्त हो जाता है (४)

इस प्रकार अभ्यास करने पर सांसारिक (सुख) संपदाओं के प्रति क्षणमात्र के लिए भी मन प्रणिहित (मन में चाह) नहीं होता तथा अहो-रात्र (रात-दिन) मोक्षार्थिनी बुद्धि होने लगती है तब (साधक को समझना चाहिए कि अब हमारी संतति में) निर्याण चित्त उत्पन्न हो गया है (५)

महायानमार्ग

करुणा मूलक चित्तोत्पाद-

निर्याण चित्त भी विशुद्ध चित्तोत्पाद के द्वारा परिग्रीहीत न हो, तो अनुत्तर बोधि की सुख-सम्पद का हेतु (पुण्य-संभार) नहीं बन पाता है।अतः बुद्धिमान लोगों को बोधिचित्त का उत्पाद करना चाहिए(६)

तीव्रवेगवान चार जलधाराओं में प्रवहमान,अत्यन्त जटिल कर्मबंधनों से सुप्रतिबद्ध, आत्माद्रष्टि के लोहे के पिजड़े में पतित, अविद्या रुपी महती घने अंधकार से यह संसार ढका है (७)

अनन्त भव सागर में जन्म-जन्मान्तर से निरंतर त्रिविध दुखों से पीड़ित, इस तरह की अवस्था को प्राप्त माताओं (जीव मात्र की) स्थिति की चिंता (महाकरुणा) से (प्रेरित) परम चित्त (बोधिचित्त) का उत्पाद करें (८)

प्रज्ञा की अतिवर्यता-

निर्याण (चित्त) एवं बोधिचित्त में अभ्यस्त होने पर भी तत्व प्रतिपत्ति प्रज्ञा के अभाव में भवमूल (अविद्या) का उच्छेद नहीं हो पाता है। अतएव प्रतीत्यसमुत्पाद के बोधक उपायों के लिए प्रयत्न करना चाहिए (९)

सम्यकद्रष्टि में प्रवेश-

जिसने संसार में एवं निर्वाण सभी धर्मों के कार्य-कारणता में बिसंवादकता के अत्यन्त अभाव को देखते हैं और (उसी ज्ञान के समक्ष निमित्त ग्राहक विकल्प के) आलम्वन का जो अधिष्ठान है, सर्वथा विशीर्ण हो जाता है, वह बुद्ध के प्रिय (जिन जननी प्रज्ञा) मार्ग में अवतरित हो जाता है(१०)

दृष्टिपरीक्षण की सम्पूर्णता-

अव्यभिचार प्रतीत्यसमुत्पाद की प्रतीति एवं प्रतिज्ञा रहित शून्यता की प्रतीतियाँ जब तक भिन्न रूपेण होती रहती है, तब तक (साधक को यह समझ लेना चाहिए कि अभी हमें)मुनिमत का बोध नहीं हुआ है (११)

जब (ये दोनों) एक को बिना छोड़े एक साथ प्रतीत्यसमुत्पाद की अविसंवादकता का दर्शन होते ही (पूर्व) निश्चय की सभी विषय प्रतीतियाँ विनष्ट हो जाता है, तो उसी समय (सम्यग्) दृष्टि की परीक्षा संपन्न होती है (१२)

प्रासंगिकमत के उभयान्तनिराकरण-

अपि च, (प्रतीत्यसमुत्पाद की) प्रतीति के द्वारा शाश्वतांत का तथा का तथा शून्यता के द्वारा उच्छेदान्त का निराकरण करते हुए (जब प्रतीत्यसमुत्पाद एवं) शून्यता का कार्य-कारण के रूप में प्रतीत होने वाले नय का ज्ञान हो जाता है। तब अन्तग्राह दृष्टियों द्वारा (उस सम्यगदृष्टि का) हरण नहीं होगा (१३)

अनुष्ठान के लिए प्रेरणा-

वत्सों,इस प्रकार (जब) मार्ग के तीन प्रमुख (मुद्दों) का यथावत ज्ञान अपने में (प्राप्त) हो जाता है तब विविक्त (एकांत स्थान का) सेवन करते हुए प्रबल उद्यम करें और अविलम्ब अंतिम उद्देश्य को सिद्ध करें (१४)

इसे बहुश्रुत भिक्षु-श्री लो-जङ्-ऽगस् पा (सुमतिकीर्ति) ने "छ-खो-द्वोन्-पो ङग् वंद्ध्-डगस् पा" के लिए अववाद के रूप में रचा है।